अक्रम यूथ

नवम्बर 2020 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

रामायण फॉर यूथ भाग - 2

अनुक्रमणिका

4 लक्ष्मण की परम सेवा

7 लक्ष्मण और नीरू माँ दोनों...

8 भवसागर के तारक को तेरा...

10 रामसेतु निर्माण में एक गिलहरी

12 अपने कालनेमी को पहचानें

16 बुज़ुर्गों के संस्कार

18 राम, लक्ष्मण, सीता...

20 दादा द्वारा दी गई लक्ष्मण रेखा

23 #कविता

नवम्बर 2020
वर्ष : 8, अंक : 7
अखंड क्रमांक : 91

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता
Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्यारे मित्रों,

पौराणिक महाकाव्य रामायण पर आधारित अक्रम यूथ की श्रेणी का दूसरा अंक प्रस्तूत करते हुए बहुत ही हर्ष और रोमांच का अनुभव हो रहा है। रामायण की कथा के मुख्य पात्र पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, माता सीता और लंकापति महाराज रावण और रामायण के मुख्य प्रसंग जैसे कि रामचंद्र जी का वनवास और उनके द्वारा दशानन रावण के साथ हुए किए गए भीषण युद्ध, साथ ही साथ रामायण में अन्य कई ऐसे छोटे-छोटे पात्रों और प्रसंग हैं जो पाठक के हृदय में गहरा असर डालते हैं। इस अंक में ऐसे ही कि कई रोचक प्रसंगों को शामिल किया गया है। आशा है कि इन प्रसंगों की यथार्थ समझ आपके जीवन में नई दृष्टि प्रदान करने में उपयोगी होगी....

फिर मिलेंगे अगले महीनें, रामायण श्रेणी के तीसरे और अंतिम अंक के साथ !!!
जय सच्चिदानंद...

***ध्यान दें:** इस अंक में प्रस्तुत किए गए रामायण के प्रसंग विविध शास्त्रों, ग्रंथों और अन्य माध्यमों में उपलब्ध जानकारियों के आधार पर संकलित किए गए हैं। जिसका एकमात्र उद्देश इतना ही है कि आज के युवा वर्ग इससे योग्य मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

लक्ष्मण की परम सेवा

जिस प्रकार मछली के जीवन का आधार जल है उसी प्रकार लक्ष्मण के जीवन का सर्व आधार श्रीराम थे। उन्होंने भाव से अपना पूरा जीवन राम की सेवा में समर्पित कर दिया था।

जब युवराज राम को अयोध्या छोड़कर वनवास जाने की आज्ञा मिली तब अश्रु भरा उदास चेहरा लेकर लक्ष्मण शीघ्र ही श्रीराम के पास गए और उनके चरण पकड़कर कहने लगे, "हे नाथ! मैं आपका दास हूँ और आप मेरे स्वामी हैं। आपकी सेवा में मुझे अपने साथ रखने की कृपा करें।" श्रीराम ने उनसे माता सुमित्रा से आज्ञा लेकर आने के लिए कहा। लक्ष्मण ने परम विनय के साथ माता को अपनी सेवा की तीव्र भावना जताई। लक्ष्मण की उत्कृष्ट भावना जानकर माता ने उन्हें वनगमन के लिए सहमति दे दी। सहमति पाकर लक्ष्मण बहुत खुश हो गए।

राम की सेवा के अवसर के सामने, अयोध्या की राजलक्ष्मी, भोग सामग्री एवं सांसारिक जीवन का लक्ष्मण के लिए कोई महत्व नहीं था। वे अपनी पत्नी को भी अपने दिल की भावना समझाकर उन्हें राज़ी करके वन के वस्त्र पहनकर श्रीराम-सीता के साथ वनवास के लिए निकल पड़े।

वनवास के दौरान जगह-जगह पर ठहरने के लिए वे वन की लकड़ियों एवं पत्तों को इकट्ठा करके उससे कुटिया बनाते, सोने के लिए शय्या तैयार करते, भोजन के लिए खाद्य सामग्री, फल एवं इँधन के लिए लकड़ी वगैरह का प्रबंध करते और वन में पदयात्रा के दौरान थके हुए राम के चरणों को दबाया करते, इस

तरह लक्ष्मण निरंतर सेवा में लगे रहते थे। कई दिनों तक निरंतर जाग सकें, ऐसी विद्या लक्ष्मण ने सिद्ध की थी। इस विद्या के द्वारा राक्षसों के उपद्रव के समय और सीता माता की विशेष सुरक्षा के लिए वे दिन-रात जाग कर पहरा देते रहते थे। लक्ष्मण कभी भी अपने प्राणों की चिंता नहीं करते थे। वनवास के दौरान असंख्य अवरोध और असुरों के सामने श्रीराम एवं सीता माता के रक्षक बने रहे। रावण के अजेय योद्धाओं के सामने भी अपनी जान को दाँव पर लगाकर सीता माता को वापस लाने में लक्ष्मण ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अपने बड़े भाई राम के प्रति लक्ष्मण का ऐसा उत्कृष्ठ सेवा भाव देखकर देवराज इन्द्र ने भी बहुत प्रशंसा की। आज हजारों वर्षों के बाद भी राम के साथ लक्ष्मण का नाम सहज ही लिया जाता है। राम-लक्ष्मण की मूर्ति की पूजा एक साथ की जाती है।

जिस तरह से लक्ष्मण जी ने रामचंद्र जी की सेवा पूरी लगन और निष्ठा से की थी उसी तरह नीरू माँ ने भी दादा की सेवा पूरी लगन और संपूर्ण निष्ठा से की और घर-घर दादा की पहचान करवाई!

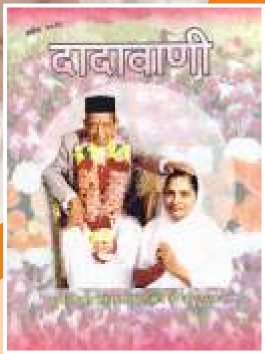

पूज्य नीरू माँ भी अंत तक दादाश्री को समर्पित रहीं और सिन्सियर रहीं, उन्हें छोड़कर नहीं गईं। इसीलिए दादाश्री को भी पूरा अवसर मिला और उन्हें पूर्ण बना पाए। दादाश्री का बहुत राजीपा प्राप्त किया, असीम कृपापात्र बने और करुणा प्राप्त की, अभेद हो गए। दो आत्मा और एक देह की तरह पहले दिन से अंत तक, बीस साल तक अखंड सेवा में दादाश्री के साथ रहे।

दादाश्री भी कहते थे कि, "**नीरू बहन, आपने मदर की तरह हमारी नर्सरी की है, बेटी की तरह चाकरी की है और नर्स की तरह सेवा की है।**"

लक्ष्मण और नीरू माँ दोनों को 'ONE MAN ARMY' कह सकते हैं।

जिस तरह लक्ष्मण राजपाट और राजवैभव छोड़कर श्रीराम के साथ वनवास के लिए गए, उनकी सेवा और रक्षा के लिए अपनी सारी सिद्धियों का उपयोग किया, वन में हर क्षण जाग्रत रह कर रात-दिन पहरा दिया और सिर्फ सेवा के ध्येय से श्रीराम-सीता का रक्षण करने में सिन्सियरली पूरा जीवन समर्पित किया..

उसी तरह मल्टी-मिलियनेर फैमिली की बेटी और खुद डॉक्टर होने के बावजूद नीरू माँ दादा-हीराबा की सेवा के लिए निकल पड़े। युगों-युगों तक जगत् दादा को पहचाने उस ध्येय के लिए अपनी सारी सूझ और काबिलियत से निरंतर जाग्रत रहकर वाणी रिकार्ड की, दादा के देह मंदिर की दिल से देखभाल की और पूरी जिंदगी सिन्सियरली दादा के जगत् कल्याण के लक्ष्य को समर्पित रहे।

दादा भगवान के प्रति उनके दिल में भक्ति थी, इसी को तो नवधा भक्ति कहा जाता है।

भवसागर के तारक को तेरा सौंप दे सुकान

अयोध्या से वनगमन के लिए निकले हुए राम, लक्ष्मण और सीता नदी के उस पार जाने के लिए जब गंगा किनारे पहुँचे तब उनकी नज़र एक केवट (नाविक) पर पड़ी। उसकी नाव से गंगा पार करने के लिए श्रीराम ने उससे विनती की। केवट, जो श्रीराम के अनन्य भक्त थे, उन्हें श्रीराम की सेवा करने का अमूल्य मौका मिला था।

चलो देखें, स्व कल्याण के लिए केवट कैसी सुंदर खटपट करते हैं??

केवट :- "कृपानिधान, आपके चरण तो चमत्कारिक हैं। इन चरणरज के स्पर्श से पत्थर की शिला एक सुंदर नारी (अहिल्या) बन गई। मुझे डर है कि आपकी चरणरज के जादू से मेरी लकड़ी की नाव न जाने क्या बन जाए! या डूब जाए! फिर मेरी कमाई नहीं होगी और मेरे परिवार का पालन-पोषण रुक जाएगा! नहीं प्रभु, नहीं... मैं आपको मेरी नाव में बिठाने का जोखिम नहीं ले सकता।"

राम :- "तो फिर हम लोग गंगा पार कैसे करें?"

केवट :- "उसका एक उपाय है। पहले तो मैं आपके चरण पखारूँगा(धोऊँगा)। बहुत घिस-घिस कर चरण रज धोऊँगा, फिर वह चरणरज वाला पानी मैं पी के देखूँगा और यदि मुझे कुछ भी नहीं हुआ तो ही मैं आपको मेरी नाव में पैर रखने दूँगा।"

श्रीराम अपने परम भक्त के दिल के भाव समझ जाते हैं और हँसते हुए इशारे से हाँ कहते हुए अनुमति देते हैं। बहुत श्रद्धापूर्वक केवट अपना भाव पूरा करता है। और फिर श्रीराम, सीता माता और लक्ष्मण को बहुत प्रसन्नता से गंगा पार करवाते हैं। सीता माता अपनी एक अंगूठी उतारकर केवट को देने के लिए श्रीराम को इशारा करती हैं तब केवट मुआवज़े के तौर पर अंगूठी लेने से मना करते हैं..

केवट :- "हे नाथ! क्या कोई धोबी दूसरे धोबी से या कोई नाई दूसरे नाई से कभी मूल्य लेता है? हम दोनों भी तो केवट ही हैं। मैं नाव से गंगा नदी पार करवाता हूँ, आप अपनी ज्ञानरूपी नाव से इस संसार को पार करवाते हैं। मैं आपसे मूल्य कैसे ले सकता हूँ??"

"हे प्रभु, मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस जैसे मैंने आपको गंगा पार करवाई है वैसे ही आप मुझे मेरा यह भव पार करवा दें।"

देखा दोस्तों! केवट ने खटपट तो की लेकिन इसके बावजूद दास भाव में रहकर श्रीराम से भवसागर पार करवाने के लिए प्रार्थना करके अपना काम बना लिया।

जन्मोंजनम की पुण्य से हमें इस कलियुग में प्रत्यक्ष ज्ञानी का संयोग मिला है। हम भी प्रत्यक्ष ज्ञानी के भीतर वाले पूर्ण प्रकट परमात्मा को पहचानें, हर एक काम ऐसा करें ताकि दादा का राजीपा प्राप्त करके कृपापात्र बन सकें और दादा की उँगली पकड़कर महाविदेह तक का भवसागर पार कर लें...

भवसागर के तारक को,
तेरा सौंप दे सुक्कान;
दादा नौका में बैठ जा,
तेरा हो जाएगा
कल्याण।

रामसेतु निर्माण में गिलहरी

जब यह पता चला कि सीताजी समुद्र के उस पार लंका में हैं तब राम की सेना को समुद्र पार करवाने के लिए रामसेतु का निर्माण करना तय हुआ। इसके लिए महाकाय वानरों ने 'रामनाम' बोलकर समुद्र में विशाल पत्थरों को तैरता हुआ छोड़कर निर्माण कार्य शुरू किया। इस भगीरथ कार्य के दौरान एक रोमांचक प्रसंग देखा गया।

महाकाय वानर बड़े-बड़े पत्थर उठाकर समुद्र में डालकर सेतु बना रहे थे, तब एक छोटी सी गिलहरी वानरों की तरह ही उत्साह से छोटे-छोटे कंकर मुँह में भरकर सेतु के पत्थरों के बीच की खाली जगह भर रही थी। श्रीराम दूर खड़े यह सब देख रहे थे। अचानक ही गिलहरी एक विशाल वानर के पैरों की चपेट में आ गई...

वानर :- तू यहाँ क्या कर रही है?

गिलहरी :- मैं मेरे श्रीराम की सेतुबंध बनाने में मदद कर रही हूँ।

वानर :- हा...हा...हा... रामसेतु बनाने के लिए तो ऐसी बड़ी-बड़ी चट्टानें चाहिए, तू क्या मदद करेगी?

गिलहरी :- मेरी जितनी शक्ति है वो सब सेवा में लगा दूँगी और खुद को श्रीराम के इस महान सेवाकार्य के लिए समर्पित कर दूँगी।

गिलहरी की बातें सुनकर सेतुबंध के काम में व्यस्त वानर को बहुत गुस्सा आया और उसने गिलहरी को पूँछ से उठाकर दूर फेंक दिया...

श्रीराम जो ये सब दूर से देख रहे थे, संयोग से गिलहरी उनके हाथों में ही जा गिरी। घबराई हुई, रोती हुई गिलहरी में तो प्रभु के प्रेम भरे स्पर्श से मानों प्राण आ गए! जाको राखे साइयां मार सके न कोई!

क्या आप जानते हैं
कि इस गिलहरी द्वारा
डाले गए छोटे कंकर
इस विशाल सेतु के
ढाँचे को भर रहे हैं
और उसे ज्यादा
मजबूत बना रहे हैं?

वानरों को बुलाकर श्रीराम ने प्रेम से समझाया, "क्या आप जानते हैं कि इस गिलहरी द्वारा डाले गए छोटे कंकर इस विशाल सेतु के ढाँचे को भर रहे हैं और उसे ज्यादा मजबूत बना रहे हैं?" छोटे-छोटे काम भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और हमेशा ही यह ज्यादा महत्वपूर्ण होता है कि आप सेवा कितने प्रेम और समर्पण भाव से कर रहे हैं। इस छोटी सी गिलहरी के हृदय में कितना प्रेम है, सेवा भाव है।

फिर राम ने कहा, "हमेशा याद रखें, छोटा और बड़ा, सभी कार्य एक समान ही महत्वपूर्ण हैं। हर एक भगीरथ कार्य को पूरा करने में अनेक निमित्त की ज़रूरत पड़ती है, अतः हर एक को प्रेरणा देनी चाहिए और कोई थोड़ा सा भी प्रयत्न करे तो उसे सहकार देना चाहिए।"

फिर गिलहरी की ओर देखते हुए राम ने कहा, "प्रिय गिलहरी, मेरी सेना द्वारा तुम्हें जो दुःख हुआ उसके लिए मैं दुःखी हूँ, रामसेतु में तुम्हारे योगदान के लिए बहुत आभार। तुम्हारा प्रेम और भाव हृदयस्पर्शी है, तुम खुशी से अपना सेवाकार्य ज़ारी रखना।" इतना कहकर प्रेम से उसकी पीठ पर तीन उँगलियाँ घूमाई। भगवान की उँगली का स्पर्श होते ही तीन रेखाएँ खिंच गई और आज भी उनकी निशानी के तौर पर भारतीय गिलहरियों की पीठ पर तीन रेखाएँ देखने मिलती है।

एक छोटी सी गिलहरी भी रामसेतु के महान कार्य के लिए कितनी समर्पित थी और उसके द्वारा अति भाव से किए गए छोटे से कार्य के लिए श्रीराम की कैसी सुंदर कृपा हुई!

लाखों-हजारों महात्मा सीमंधर स्वामी-दादा के मिशन में सेवा देने के लिए उत्साहित हैं। जिन महात्माओं को दादा के जगत् कल्याण के विशाल तंबू का खंभा, खूँटी या छोटी कील बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हो उन्हें संपूर्ण समर्पण भाव से, सिन्सियरली और कमिटमेन्ट के साथ काम करते रहना चाहिए और दादा के कृपापात्र बनकर काम निकाल लेना चाहिए।

अपने कालनेमी को पहचानें

यह तब की बात है जब राम और रावण की सेना के बीच युद्ध के दौरान लक्ष्मण मूर्छित हो गए। वैद्यजी ने रात को जब लक्ष्मण को जाँच कर बताया कि सूर्योदय के पहले अगर कोई हिमालय पर्वत की संजीवनी जड़ी-बुटी लेकर आए तो ही लक्ष्मण के प्राण बच सकते हैं, यही एक मात्र उपाय है, तब हनुमान ने ऐसे असंभव कार्य को भी पूरी शक्ति लगाकर पूरा करने का निश्चय किया और श्रीराम की आज्ञा लेकर हृदय में राम नाम धारण करके जड़ी-बूटी लाने वहाँ से चल पड़े।

क्या आपको भी ऐसे कोई कालनेमी मिले हैं?

___

___

___

गुप्तचर से इस बात का पता लगते ही रावण ने कालनेमी नामक एक राक्षस को हनुमान को मार्ग से भटकाने का काम सौंपा ताकि वे अपना निश्चय पूरा न कर सकें। हनुमान को भ्रमित करने के लिए कालनेमी ने योजना बना ली। अपने मायाजाल से मार्ग के बीच एक सुंदर सरोवर, पास में रमणीय आश्रम और आश्रम के आसपास अति सुंदर बाग बनाया। फिर कालनेमी राक्षस ने तपस्वी मुनि का वेश धारण किया और तल्लीन हो कर आश्रम में राम नाम जपने लगा। इस प्रकार राम भक्त बनकर हनुमान को अपनी ओर आकर्षित किया।

वह कपटी मुनि रामचंद्रजी के गुणों की कथा कहने लगा। हनुमान के जल माँगने पर उन्होंने पास वाला तालाब दिखाया और कहा कि "जलपान करके आइए फिर मैं आपको ऐसी विद्या सीखाऊँगा कि आप एक ही क्षण में अपना ध्येय पूरा कर पाएँगे।" इस प्रकार, कालनेमी की एक-एक चाल के कारण हनुमान को ध्येय तक पहुँचने में विलंब होने लगा।

आपके ध्येय में सपोर्ट करेंगे ऐसा कहकर राह से भटकाया है? आपने अनजाने में ही ऐसे दोस्तों को अपने जीवन में स्थान दिया है?

सद्भाग्य से, हनुमान तालाब में नहाने गए तब देवी की कृपा से उन्हें कालनेमी के कपट और षडयंत्र का पता चला। हनुमान को बहुत गुस्सा आया और तुरंत ही वापस जा कर कालनेमी को ऐसा पछाड़ा कि वह वहीं मर गया। उसके बाद हनुमान अपने ध्येय से कहीं भी भटके बगैर उस पर्वत पर पहुँचकर जड़ी-बूटी लेकर सूर्योदय से पहले ही युद्धक्षेत्र वापस पहुँच गया और लक्ष्मण के प्राण बचाने में जड़ी-बूटी अपना काम करती है।

इससे पहले कि वे आपके निश्चय को तोड़ दें, आप उन्हें जड़ से खत्म करने के लिए कौन से कदम उठाओगे?

विद्यार्थी का अनुभव

बचपन से ही मेरा ध्येय सफल इंजीनियर बनने का था। इस ध्येय के कारण ही दसवीं कक्षा के बाद मैंने साइन्स में एडमिशन लिया। बहुत मेहनत करके ग्यारहवीं कक्षा में मैं अच्छे मार्क्स से पास हुआ। मेरा जोश और सिन्सियारीटी देखकर पापा बहुत खुश थे। इन्टरनेट और फोन की आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से अच्छी पढ़ाई करके और भी अच्छा रिज़ल्ट ला सकूँ ऐसे आशय से बारहवीं कक्षा में आते ही मेरे पिताजी ने मुझे एक स्मार्ट फोन दिलवाया। उसके उपयोग से दोस्तों के साथ स्टडी मटीरियल शेयर करना और प्रश्नों की ज्यादा चर्चा होने लगी, जो कि मेरी पढ़ाई में बहुत हेल्पफूल रहता था। मैं भौतिक विज्ञान के प्रयोग 'यु ट्युब' के वीडियो पर देखता और बहुत आनंद उत्साह के साथ आसानी से समझकर पढ़ाई करने लगा।

अब मोबाइल मेरे पास ही रहता था। धीरे-धीरे मेरा ध्यान अन्य एप्स एवं गेम्स की ओर जाने लगा। फ्रेश होने के लिए कभी-कभी गेम्स खेलता था। कॉलेज एवं ट्यूशन के लड़के-लड़कियों के साथ वोट्सएप पर कभी पढ़ाई से संबंधित चैटिंग करता था तो कभी गपशप! कभी-कभी 'यु ट्युब' पर कोमेडी वीडियो और मुवी भी देख लेता था। पहली तिमाही परीक्षा में मुझे बहुत कम मार्क्स मिले। पापा-मम्मी और मैं चिंतित थे। अच्छी कॉलेज, अच्छे कोर्स में एडमिशन मिलेगा या नहीं?

नवम्बर 2018 में हम दादा की 111वीं जन्म जयंति पर आयोजित 'आनंद नगरी' देखने गए थे। तब 'मिट सकती हैं ये दूरियाँ' शो में मोबाइल के उपयोग-दुरूपयोग के अलावा फैमिली लाइफ एवं पढ़ाई पर उसके प्रभाव के बारे में भी समझाया गया था। उसे देखते ही समझ में आ गया कि पढ़ाई के लिए मोबाइल का उपयोग करते-करते मैं उसका दुरूपयोग करने में ज्यादा समय बरबाद कर रहा था। शो के बाद हम वहाँ उपस्थित आप्तपुत्र से मिले और अच्छी पढ़ाई के मेरे ध्येय के बारे में उन्हें बताया। उनके मार्गदर्शन एवं नियमित परिचय से जिम्मेदारी के साथ मोबाइल का विवेकपूर्वक उपयोग करना सीखा। इससे दादा के आशीर्वाद से मेरे समय और शक्ति का अच्छा उपयोग कर पाया।

बारहवीं कक्षा में अच्छे मार्क्स लेकर फिलहाल मैं मेरे ध्येय के अनुसार अच्छे कॉलेज में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा हूँ।

संस्कार बुजुर्गों के

स्वयंवर के बाद श्रीराम और सीता के विवाह का आयोजन किया गया है। उस अवसर पर जब श्रीराम के पिता राजा दशरथ एवं सीता के पिता जनक विदेही का मिथिला नगरी में मिलन होता है तब उन दोनों के बीच जो संवाद हुआ था, वह नीचे दिया गया है...

अवध नरेश! मिथिला आपका स्वागत करती है। यह मेरे अहोभाग्य हैं कि आपकी चरणरज से मिथिला पवित्र हो गई।

दशरथ राजा

मिथिलेश्वर, आपकी आज्ञा हुई और हम आपके प्रेम की डोर से खिंचे चले आए।

जनक राजा

इतनी प्रतिष्ठा, इतना सौभाग्य मुझे प्राप्त होगा, यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था! रघुकुल से संबंध जुड़ने से मेरे वंश की प्रतिष्ठा भी बढ़ गई। वर्ना मैं तो कन्या का पिता हूँ, आपका दास हूँ। मेरी और आपकी बराबरी कैसे हो सकती है?

आपने सच कहा महाराजा जनक, बराबरी कैसे हो सकती है? आज आप दाता हैं और मैं एक याचक, एक भिखारी हूँ, जो आपके द्वार पर आपकी कन्या का दान माँगने आया है। दान देने वाला दाता तो सदा महान होता है। शास्त्र भी कहते हैं कि दान लेने वाला दाता के अधीन होता है। अतः आप जो आज्ञा करेंगे वह हमें शिरोधार्य है।

आप कितने उदार हैं महाराजा दशरथ! अपने स्नेह के बँधन में आपने विदेही को भी बाँध लिया। आपके साथ देवतातूल्य महान विभूतियों का स्वागत करके मेरा मस्तक अभिमान से ऊँचा हो गया।

वहाँ उपस्थित सभी नगरजनों का हृदय भर आया। अपने राजा एवं उनके संबंधों के प्रति सभी प्रजाजन खुद भी गर्व महसूस करने लगे। आज भी हम इस संवाद को सुनते हैं तो हमें बहुत अहोभाव होता है न!!

ऐसे थे हमारे बुर्जुग और उनका बातचीत करने का तरीका...

ऐसा था हमारे पूर्वजों का विनय, विवेक और अहोभाव से शोभित आदर्श व्यवहार... उस ज़माने में, सभी अपने कर्तव्य पर ही ध्यान देते थे जिससे एक-दूसरे के प्रति सहज ही विनयभाव रहता था! सामने वाले व्यक्ति के ऊँचे गुण ही देखते थे, इसलिए लघुत्तम भाव से भरा विवेकपूर्ण व्यवहार बहुत शोभा देता था!

इस बारे में दादाश्री क्या कहते हैं, देखें...

वाणी, वर्तन और विनय मनोहर होने चाहिए

भगवान ने कहा है कि बोलने में विवेक रखना, विनय रखना। विवेकपूर्वक बोलना चाहिए, विवेकरहित नहीं। उसमें जोखिम है। सूरत की कोर्ट में एक वकील ने ऐसा कहा, 'माइ ऑनरेबल जज इज डोज़िंग (मेरे माननीय जज झपकी ले रहे हैं।)' अब वे खीर खाकर आए थे तो थोड़ी झपकी लग गई, तब क्या कोई गुनाह हो गया? उनसे हमें न्याय प्राप्त करना है। वह साफ दिल का आदमी था इसलिए ऐसा कह दिया। उस दिन तो साहब गुस्सा नहीं हुए। उस दिन तो साहब ने खुश होकर बात की लेकिन अंत में जजमेन्ट में बदला लिया क्योंकि ऐसा नहीं बोलना चाहिए था। विवेक होना चाहिए। जब तक जगत् व्यवहार की आपको ज़रूरत है, तब तक जैसा मनोहर लगे, वैसा बोलो।

पहले वाणी होनी चाहिए, फिर वर्तन और फिर विनय, तीनों मनोहर होने चाहिए। ज्ञानी पुरुष का वर्तन हमारे मन का हरण कर ले ऐसा होता है । वाणी भी मन का हरण कर ले ऐसी होती है और विनय भी ऐसा कि मन का हरण कर ले। इतने बड़े ज्ञानी पद पर होने के बावजूद भी वे हम से भी ज्यादा विनय रखते हैं।

हमारी वाणी, वर्तन और विनय, ये तीनों चीज़ें मनोहर होती हैं। मन का हरण करें, ऐसी होती हैं और (आपको), कभी न कभी ऐसा होना चाहिए, ऐसा बनना पड़ेगा। वह तो, जो वैसे बन गए हैं उनके पीछे पड़ेंगे तो वैसा बना जा सकेगा या नहीं बना जा सकेगा?

प्रश्नकर्ता : बना जा सकेगा।

दादाश्री : बस! और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है हमें। उनके पीछे पड़ना है। अनंत जन्मों का नुकसान एक जन्म में खत्म करना है। इसलिए हृदयपूर्वक संभालना तो पड़ेगा न?

राम, लक्ष्मण, सीता और रावण के

पूर्वभव

भरत क्षेत्र की एक नगरी में नयदत्त नामक एक सामान्य धनिक बनिया था। उसकी पत्नी का नाम सुनंदा, उनके दो बच्चे, धनदत्त एवं वसुदत्त। उसी नगरी में सागरदत्त नामक बनिया और उसकी पत्नी रत्नप्रभा को गुणवती एवं गुणवान नामक दो संतानें थीं। गुणवती के पिता एवं भाई ने उसकी सहमती से सुंदर गुणवती की सगाई धनदत्त से कर दी। उसी नगरी में एक बहुत धनवान बनिया, श्रीकांत रहता था, जिसकी हमेशा से गुणवती से ब्याह करने की अभिलाषा थी। गुणवती के भाई गुणवान को इस बारे में पता चलता है। वह धन के मामले में वह बहुत लोभी था। धनदत्त एक साधारण बनिया था इसलिए गुणवती के साथ उसकी सगाई होने के बावजूद भी वह गुणवती की शादी धनवान श्रीकांत से करवाने के लिए तैयार हो जाता है।

यज्ञबली ब्राह्मण ने वसुदत्त से कहा, "तुम्हारे बड़े भाई धनदत्त के साथ सगाई होने के बावजूद भी गुणवती का भाई उसकी शादी श्रीकांत से करवाना चाहता है।" यह सुनकर गुस्से में आकर वसुदत्त अंधेरी रात में खड़ग लेकर श्रीकांत को मारने उसके घर जाता है। वसुदत्त सोए हुए श्रीकांत पर खडग से ज़ोर से हमला करता है। गिरते-गिरते श्रीकांत भी उसी खड़ग से वसुदत्त पर वार करता है और वहीं दोनों की मृत्यु हो जाती है। तीव्र आर्तध्यान में मृत्यु होने से दोनों विंध्याचल के जंगल में हिरन बनकर जन्म लेते हैं।

गुणवती के कारण ऐसी घटना होने से नगरजनों ने उसे धनदत्त के साथ शादी नहीं करने दी। अपने प्रिय भाई की अचानक मृत्यु, अपना अपमान एवं सगाई की हुई कन्या से संबंध टूटने के कारण धनदत्त बहुत दुःखी थे। वे देश छोड़कर चले गए। दूसरी तरफ

गुणवती को भी धनदत्त के साथ सगाई टूटने के बाद किसी और से शादी नहीं होने से बहुत निंदा हुई और उस वजह से के गुणवती की आर्तध्यान से मृत्यु हो जाती है। विंध्याचल के जंगल में जहाँ वसुदत्त और श्रीकांत हिरन बनकर जन्में थे, वह भी वहीं हिरनी बनकर जन्म लेती है।

यों एक दूसरे के दुश्मन हो चुके दोनों अगले जन्म में हिरन बनकर साथ में जनम लेते हैं और गुणवती भी उनके साथ उसी जगह पर हिरनी बनकर जनम लेती है। इस प्रकार अनेक जन्मों तक जल, स्थल एवं तिर्यंच गति के जीवों में तीनों मिलते थे और किसी न किसी कारण से झगड़कर प्राण त्याग करते रहते थे।

दोस्तों, क्या आप जानते हैं?

ऐसे कई जन्मों के बाद धनदत्त ने श्रीराम का अवतार लिया, वसुदत्त ने लक्ष्मण का और गुणवती सीता माता हुई। और श्रीकांत के साथ जो बैर बाँधा था, वह अनेक जन्मों के बाद रावण के जन्म में भी ज़ारी रहा।

श्रीराम को गुरु वशिष्ठ से दुर्लभ आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसीलिए उसी जन्म में कर्म पूरे करके वे मोक्ष में गए। जन्मोंजनम के बैर के संबंध के कारण सीता माता, लक्ष्मण और रावण के जीव अभी भी कर्मबंधन से मुक्त नहीं हो पाए हैं।

दादा द्वारा दी गई

लक्ष्मण रेखा

अक्रम में फिसलने के तीन स्थानक!

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद संसार में फिसलने के कौन से स्थानक हैं?

दादाश्री : ज्ञान प्रप्ति के बाद संसार में फिसलने की तीन ही वस्तुएँ हैं। और सब कुछ खाना-पीना, कपड़े पहनना, चश्मा पहनना, सिनेमा देखने जाना, चाहो सो खाना मगर एक, मांसाहार मत करना। दूसरा, ब्रांडी की बूंद तक नहीं छू सकते और तीसरे, पर-स्त्री (या पर-पुरुष) नहीं। पर-स्त्री का विचार आने पर प्रतिक्रमण करना। ये तीन ही चीज़ें गिरने के स्थानक है, और कोई चीज़ गिराने वाली नहीं है। गिरे कि फिर ठिकाना नहीं कहीं। इसलिए हम कहते हैं कि हमारे साथ मत आना और आये तो गिरने के बाद हड्डी भी हाथ में नहीं आनेवाली ऐसा है। यह तो बहुत ऊँचे स्थान, हाईलेवल पर ले जाते हैं। उसके बजाय थोड़े ऊपर गये हों और गिर जायें तो थोड़ी हड्डियाँ तो हाथ लगें! और कोई गिरने के भयस्थानक नहीं है। और तो धंधा-रोजगार करो, सब करो, चाय पीयो, उसमें हर्ज़ नहीं है। चाय वह इन्टोक्सिकेशन है, पर फिर भी पीने में हर्ज नहीं है। वह कैफ नहीं चढ़ाती। यह शराब पीने पर आत्मा बेभान हो जायें मतलब खतम हो गया। फिर ज्ञान सारा खलास हो गया। फिर उसकी नर्कगति होती है और पर-स्त्री में भी ऐसा ही है। पर-स्त्री संबंध में निपटारा नहीं होता। यह शराब संबंध में भी निपटारा नहीं होता। मांसाहार संबंध में भी निपटारा नहीं होता। लिखकर रखना। गिराने वाले स्थानक पसंद नहीं है न? कि पसंद हैं?

लक्ष्मण-----रेखा

दादाश्री की पहली ऑनलाइन जन्मजयंती मनाने के लिए तैयार हो न?

#कविता

रामायण का एक-एक पात्र मानो कोई संहिता है...
इस महाकाव्य के केंद्र में संस्कार और पवित्रता है...

महानता का मद नहीं, साथ ही अतिशय विनम्रता है...
देह से अलग जनक विदेही कोई निर्मल सरिता हैं...

जिन्होंने गंगा को तारा, स्वंय भवतारक उनके ऋणी हैं...
चरण धोकर चरणरज पी, केवट कितने गुणी हैं...

जगत् में लक्ष्मण, सेवा और अधीनता की पराकाष्ठा है।
स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं, जिनके रोम-रोम में निष्ठा है...

मन-वचन-काया और श्वासोश्वास श्रीराम को अर्पण है।
जगत् में सदा उदाहरण के तौर पर लक्ष्मणजी का समर्पण है।

वानर सेना या छोटी गिलहरी, हर एक की सेवा अमूल्य है...
हर एक कल्याण के निमित्त हैं, जो शुद्धभाव करते हैं...

एक-एक पात्र यहाँ अनेक सद्गुणों का समन्वय है...
रामायण नहीं है मात्र शास्त्र, चलता-फिरता विद्यालय है...

दादा के युवाओं द्वारा

नवम्बर 2020
वर्ष : 8, अंक : 7
अखंड क्रमांक : 91

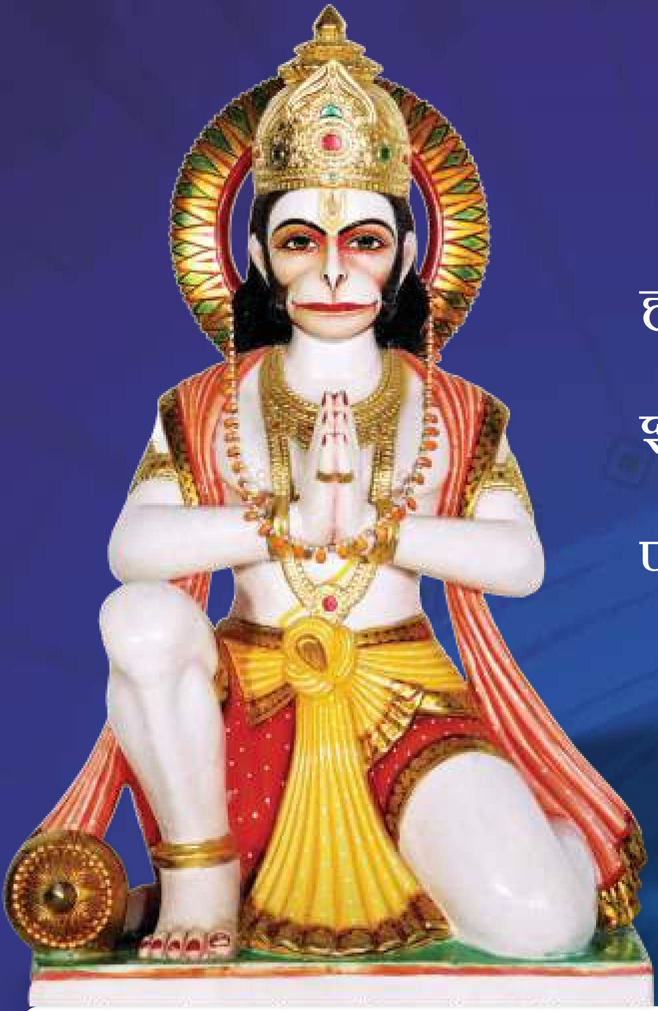

हनुमान जी दादा
शक्ति दीजिए,
प्योर रहने की...

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.